ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

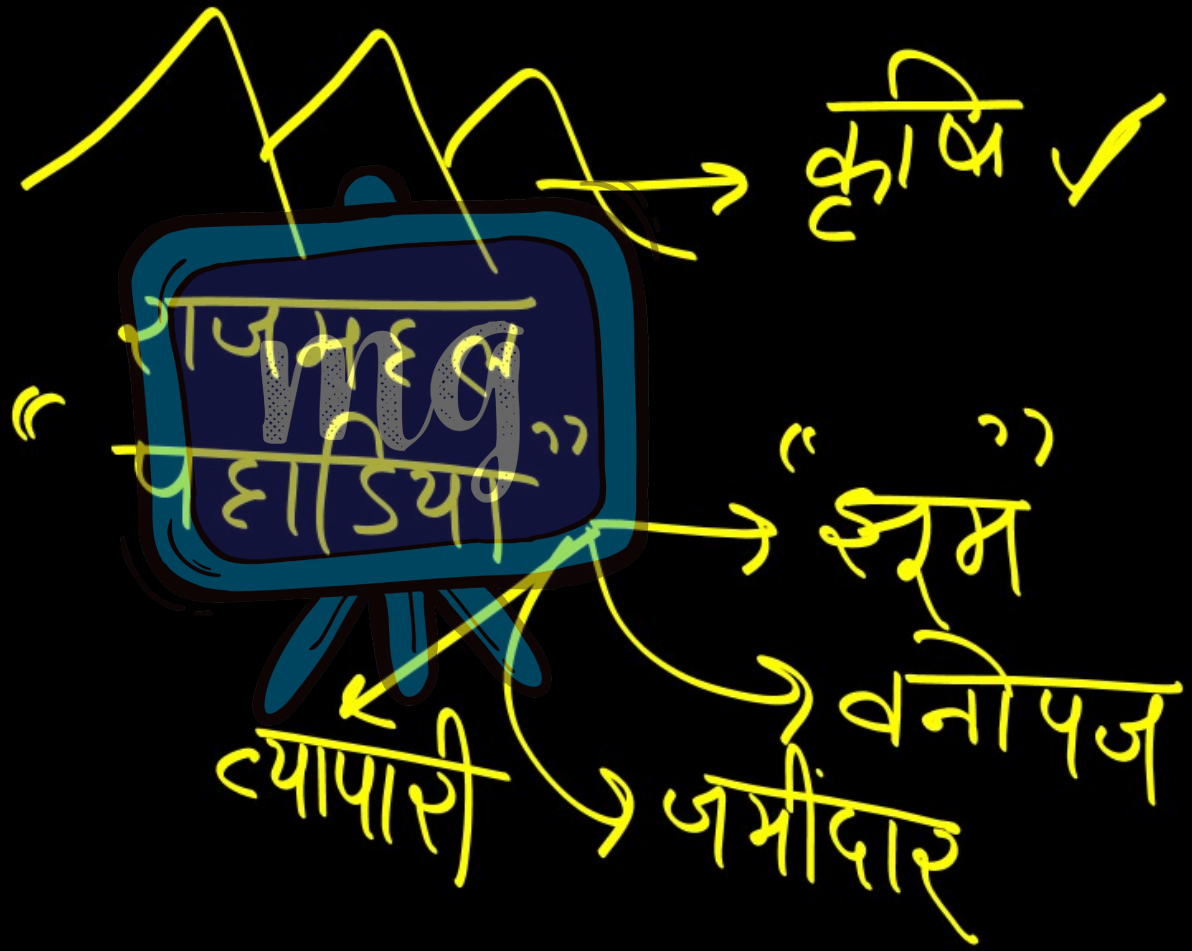
अध्याय - 9

उपनिवेशवाद और देहात

भाग - 4

प्रीतेश जोशी




कृषि
"झूम"
वनोपज
जमींदार
व्यापारी

ipca
A dose of life

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

संथाल - अगुआ बाशिंदे

संथाल विद्रोह :- 1855-56

- संथाल लोग 1780 के आस-पास बंगाल में आने लगे थे।
- संथाल मुख्यत: कृषक थे।
- जमींदार लोगों ने नयी कृषि भूमि तैयार करने और कृषि क्षेत्र का विस्तार करने के लिए इन्हें आमंत्रित किया।
- 1832 तक, जमीन के एक काफी बड़े इलाके को "दामिन-ए-कोह" के रूप में सीमांकित कर दिया गया।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

94
00

दामिन-ए-कोह - यह भागलपुर से राजमहल तक का वन क्षेत्र था।

- ब्रिटिश सरकार द्वारा दामिन-ए-कोह का निर्माण संथाल समुदाय को बसाने के लिए किया गया था।
- सरकार (राज्य) ने भारी कर लगाए।
- साहूकार (दिकू) लोग संथालों की जमीन हड़प लेते थे।
- संथाल विद्रोह हुआ - 1855-56
- नेता - सिधू मांझी
- प्रतीक - हल

ipca
A dose of life

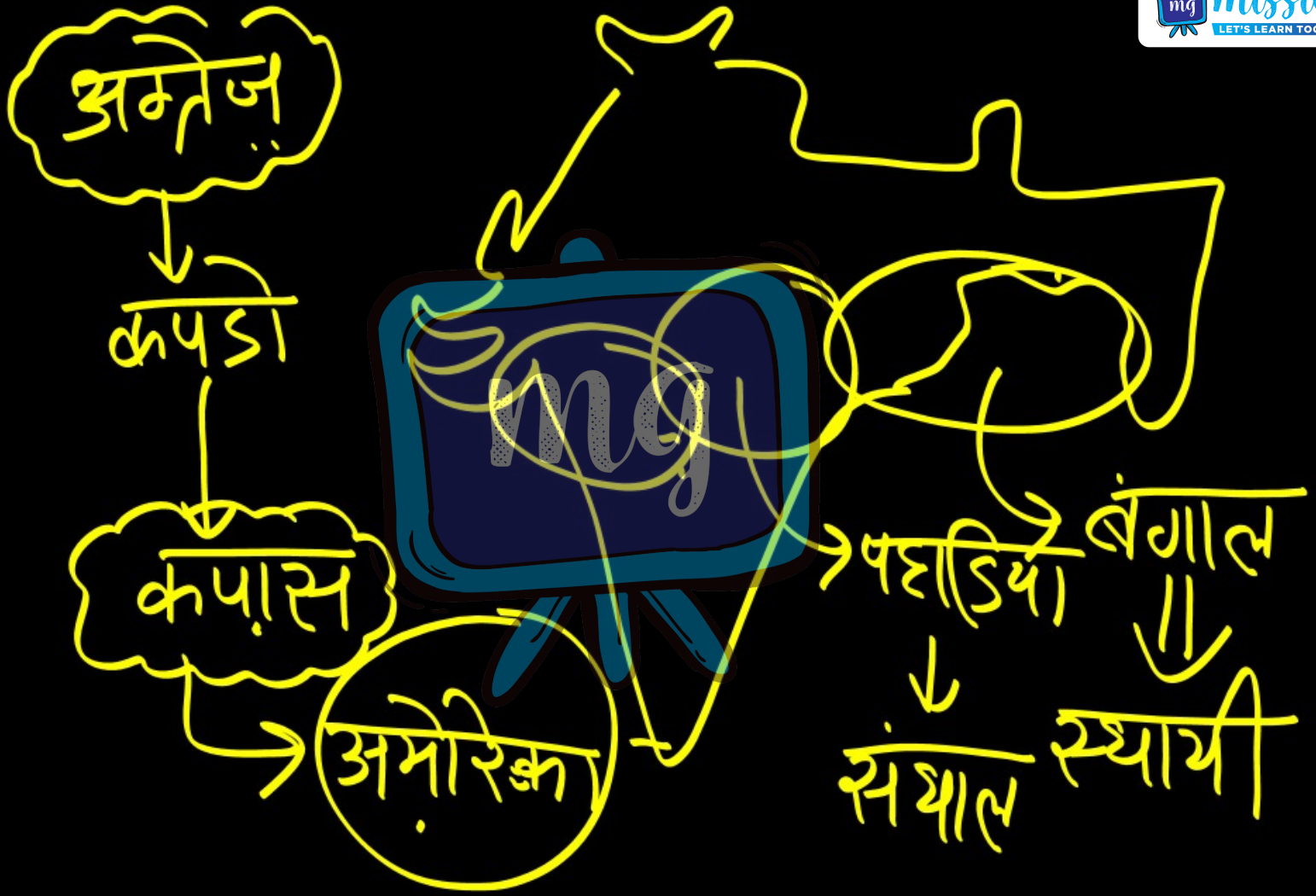
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER





ipca
A dose of life

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



ipca
A dose of life

19वीं शताब्दी → किसान आंदोलन

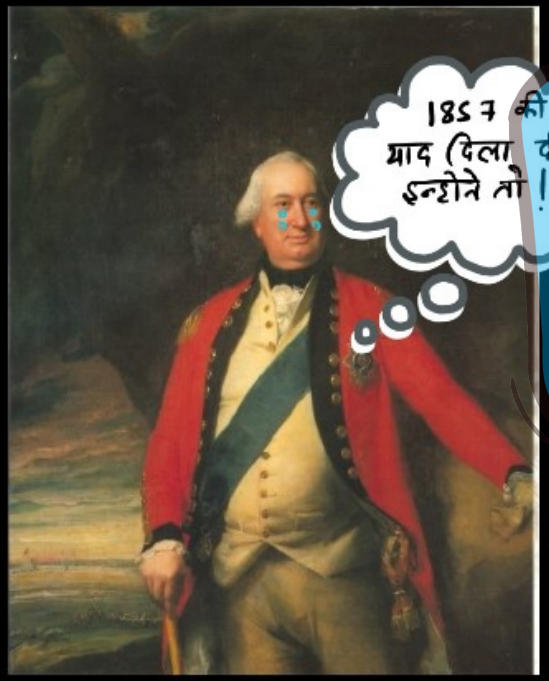
साहूकार
सरकार (2)

1875 दक्कन

अनाज
व्यापार

लूट - पाट

शुरू : पूना (सूपा) (मंडी)



mg अहमदनगर

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ipca
A dose of life

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

देहात विद्रोह :-

- बम्बई दक्कन (पूना)
- 12 मई 1875 किसानों ने साहूकारों के विरूद्ध विद्रोह किया। यह पूना के एक गांव सूपा से प्रारम्भ हुआ।
  - क्यों ?

साहूकार

अंग्रेज

अनाज

ipca
A dose of life

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1810 → कीमत ↑

↓

उपज ↑

mg

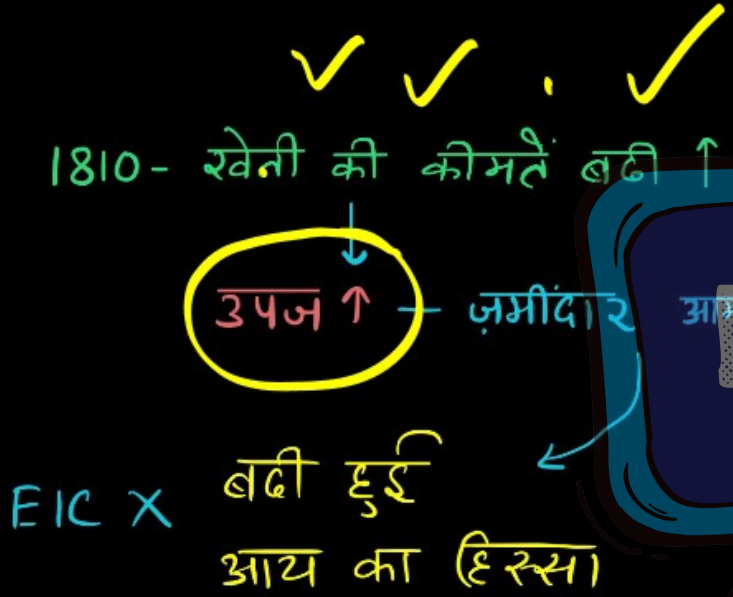
जमींदार ↑ 100 (150)

स्थायी " → (90)

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

रैयत → किसान

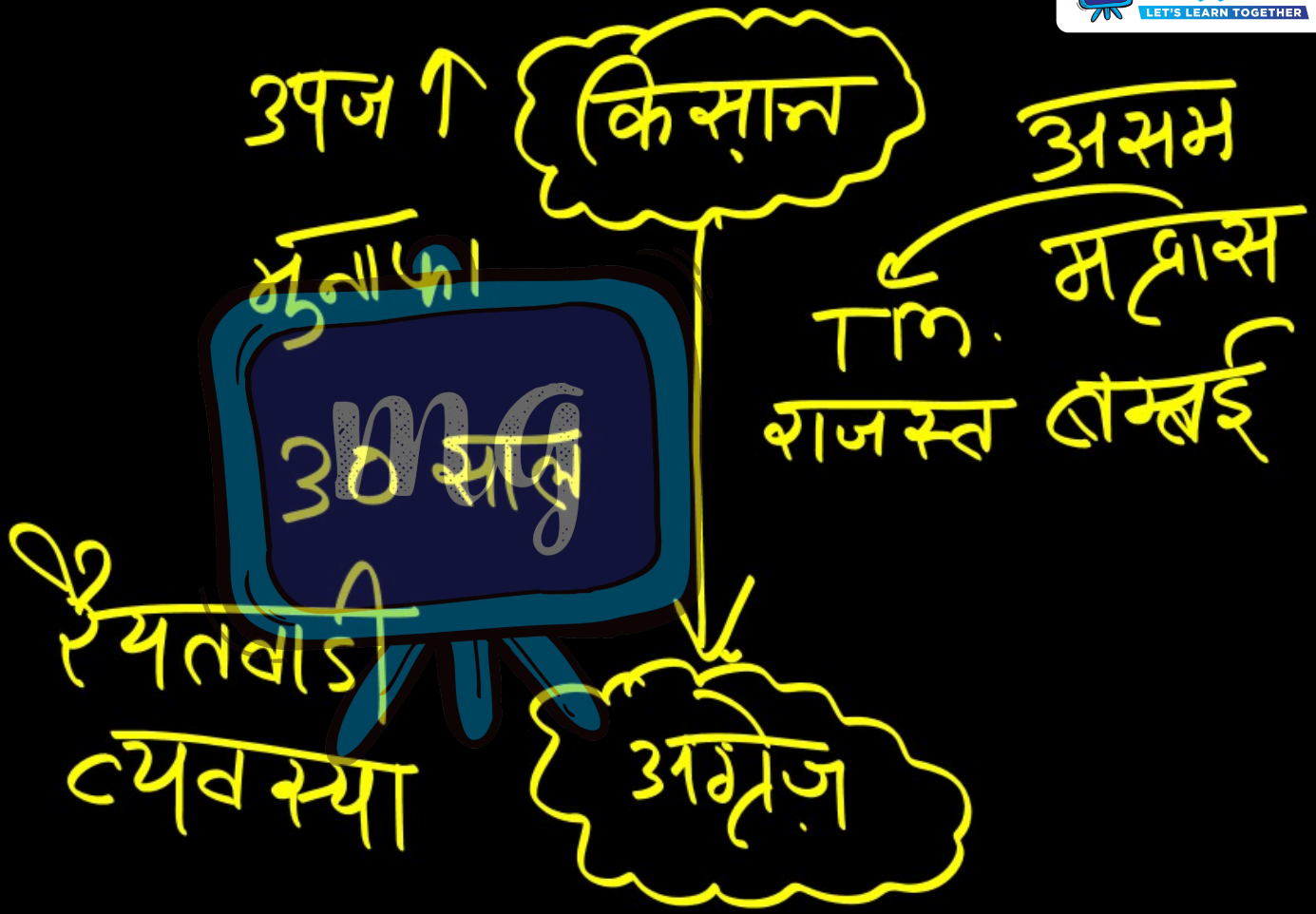


एक नयी राजस्व प्रणाली :-

- रैयतवाड़ी बन्दोबस्त : बम्बई दक्कन में लागू की गयी (मद्रास, बम्बई और असम)
- हर 30 वर्ष बाद जमीनों का फिर से सर्वेक्षण किया जाता था और राजस्व की दर तदनुसार बढ़ा दी जाती थी।
- 1820 ई. में सम्पूर्ण मद्रास में थामस मुनरो के द्वारा लागू की गयी।
- राजस्व की राशि सीधे रैयत के साथ तय की जाती थी।
- अकाल के समय भी राजस्व कठोरतापूर्वक वसूल किया जाता था।

ipca
A dose of life

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. ऐयतवाडी व्यवस्था क्या थी?

" " को महलवाड़ी

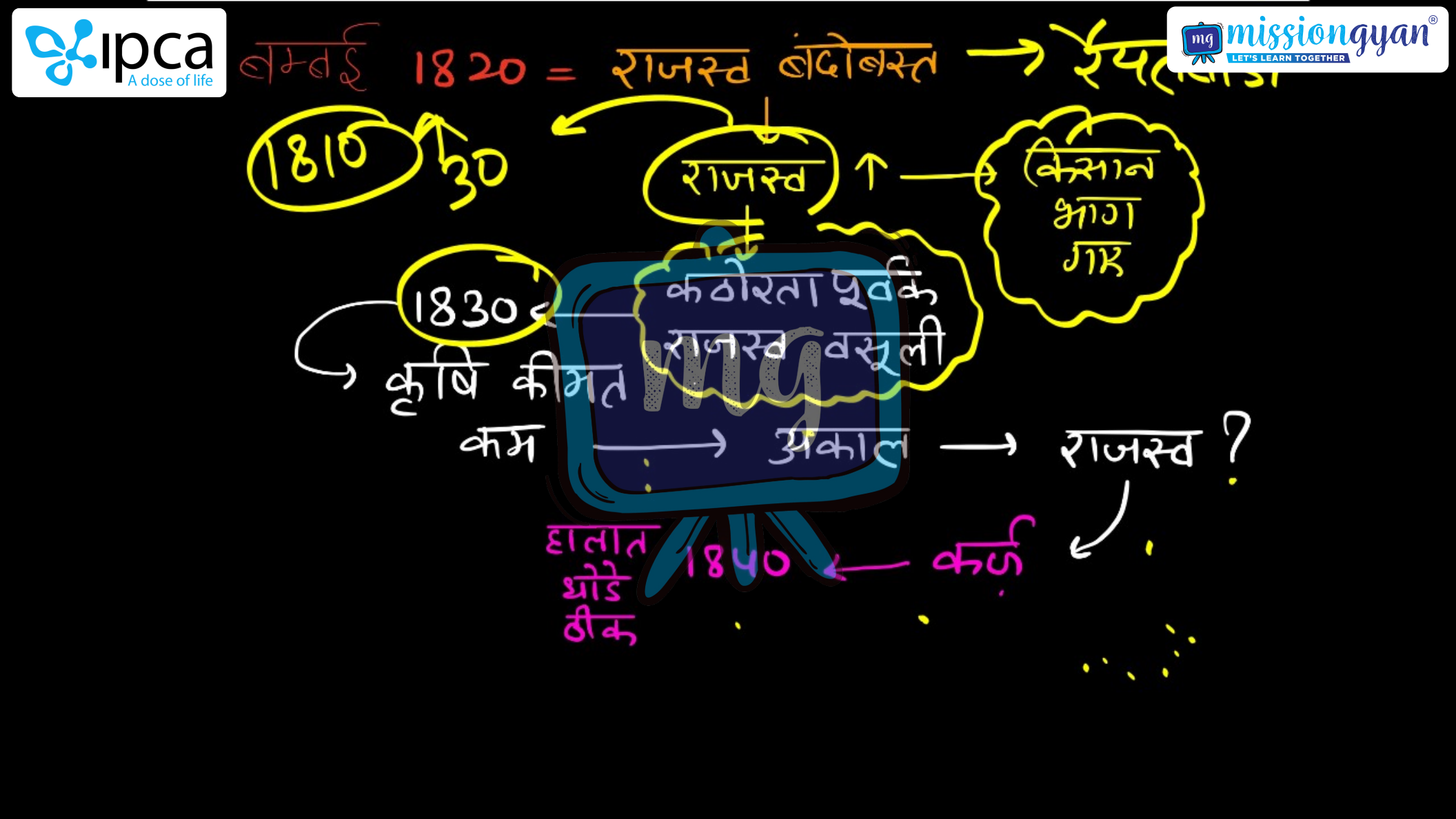
मे लागू किसने किया?

" से अंग्रेजो

को क्या फायदा पहुंचा?

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



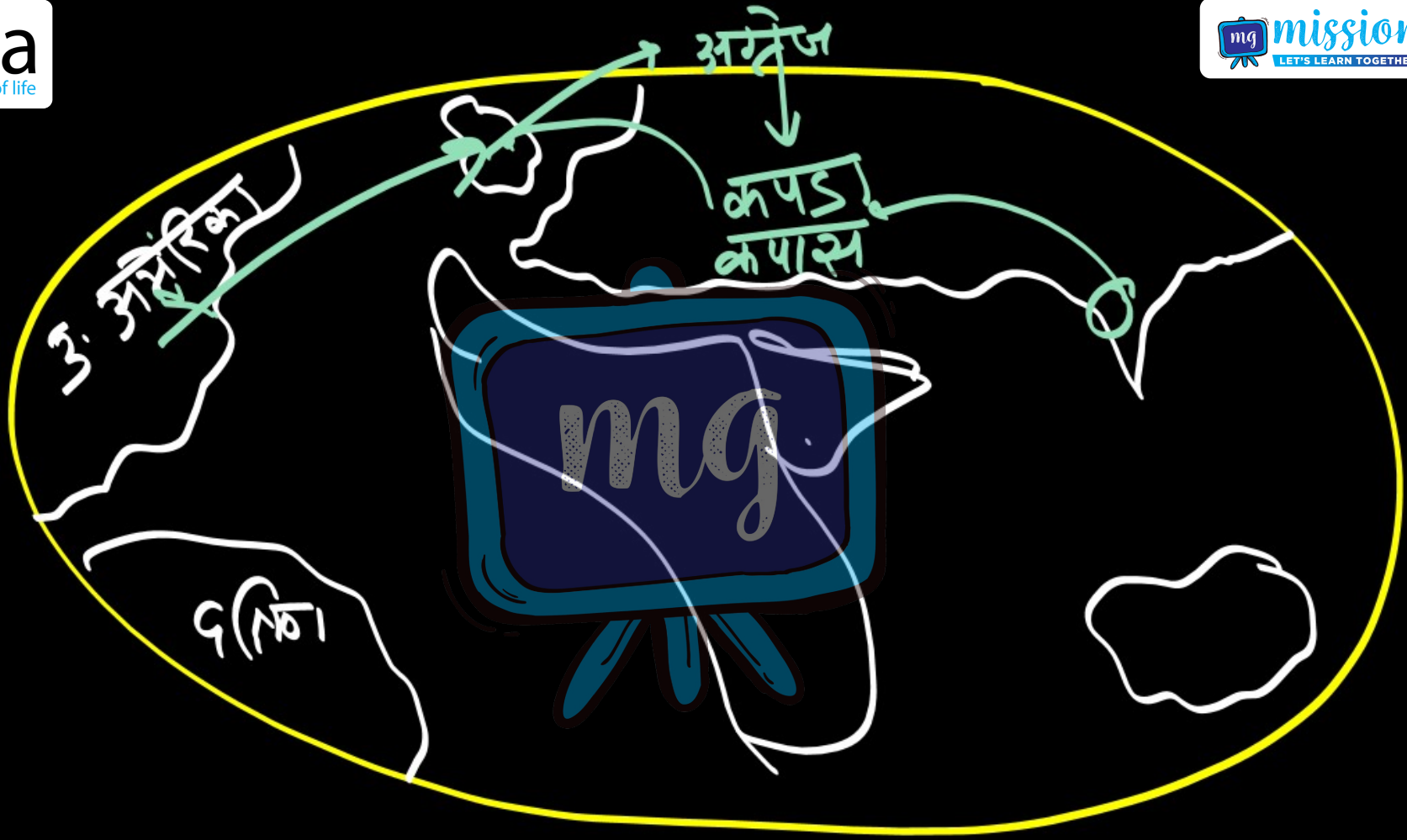
1860 - कपास - 3/4 भाग = अमेरिका

अंग्रेजों को डर था - अगर स्त्रोत बंद हुए तो ?

→ स्त्रोत ढूंढ रहे थे।

1861 - अमेरिका में युद्ध था

→ कपास में गिरावट


अंग्रेज
कपड़ा
कपास
उ. अमेरिका
दक्षिण

ipca
A dose of life

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अन्य देशों को संदेश = कपास लाओ !

बम्बई में कपास उत्पादन बढ़ाने की कोशिश की।

बम्बई कपास निर्यातक → साहूकारों

ग्रामीण किसान

प्रत्येक एकड़ = 100 ₹
अग्रिम राशि दी
10% भारत → ब्रिटेन

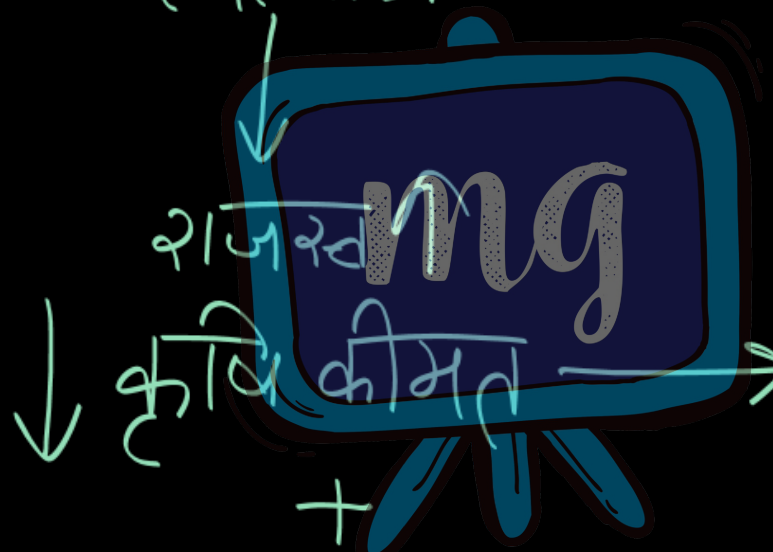
mg

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1810 → कृषि कीमत ↑

ईयतवाडी



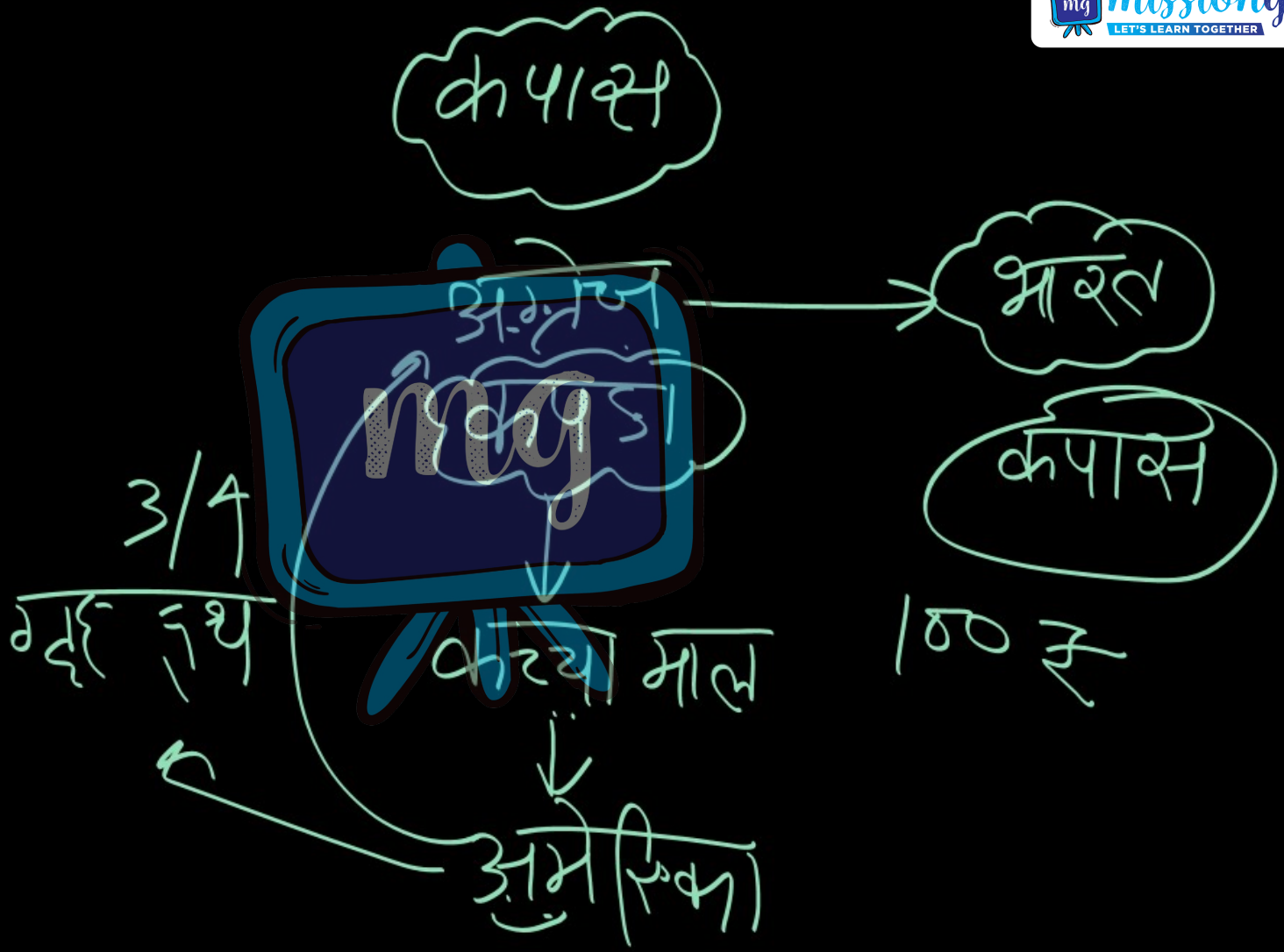
राजस्व

↓ कृषि कीमत → भाग

बलपूर्वज

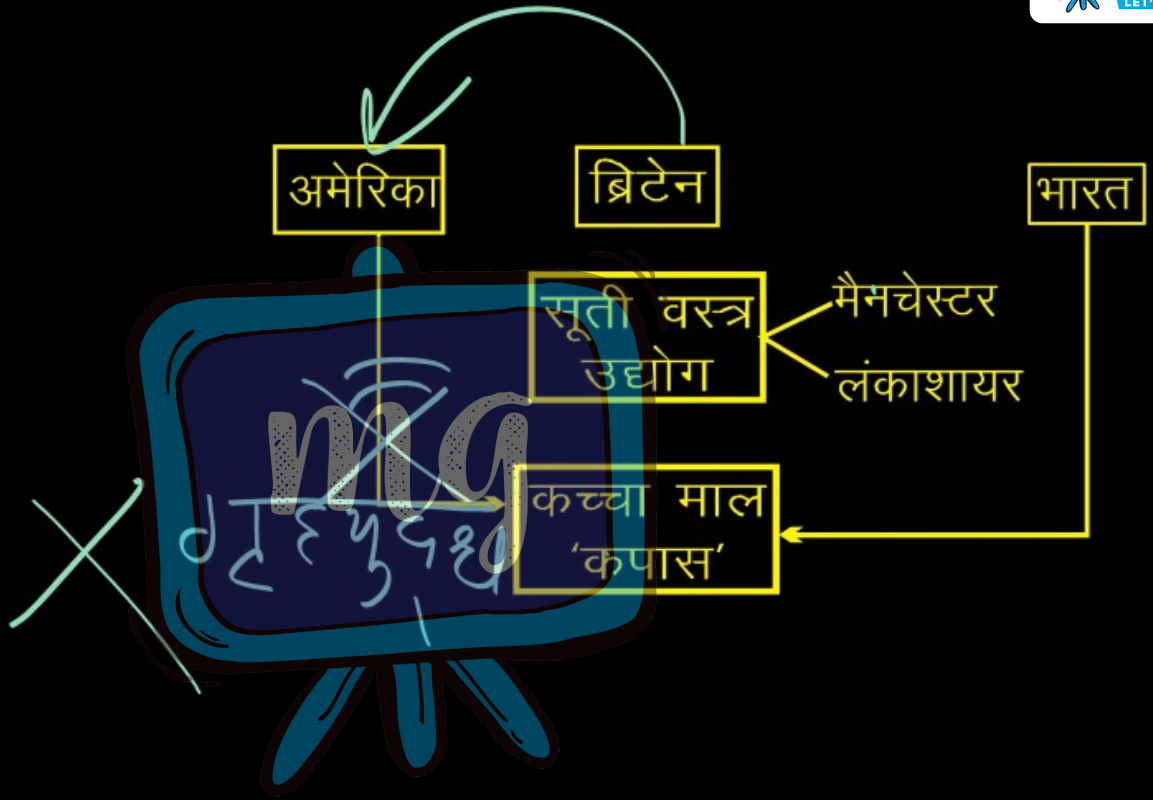
+

अकाल


कपास
अंग्रेज
भारत
कपास
3/4
वह धन
कच्चा माल
100 रु
अमेरिका

फिर कपास में तेजी आई :-

- 1860 से पहले ब्रिटेन में कपास का 3/4 भाग अमेरिका से आता था।
- सन् 1861 में अमेरिकी गृहयुद्ध छिड़ गया।


अमेरिका
ब्रिटेन
भारत
सूती वस्त्र उद्योग
मैनचेस्टर
लंकाशायर
कच्चा माल 'कपास'

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- 1857 में ब्रिटेन में कपास आपूर्ति संघ की स्थापना हुई।
- 1859 में मैनचेस्टर कॉटन कम्पनी बनायी गयी।

उद्देश्य :- "दुनिया के हर भाग में कपास के उत्पादन को प्रोतसाहित करना था, जिससे कि उनकी कम्पनी का विकास हो सके।"



ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- ब्रिटेन – कपास की आवश्यकता है।
  - ↓
- कपास सौदागर / साहूकार
  - ↓
- भारतीय किसान
  (प्रति एकड़ के लिए 100 रूपये अग्रिम राशि दी जाने लगी।)
- 1862 में ब्रिटेन में कपास की आपूर्ति का 90 प्रतिशत भाग भारत से जाने लगा।
  - ↓

कपास उत्पादकों को क्या मिला ?

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. 1861 से पहले ब्रिटेन अपनी कपास (कच्चे माल) की आपूर्ति कहां से करता था?



ऋण का स्त्रोत सूख गया

भारत 1st ⟶ 1865 - निर्यात ↓ ⟶ अमेरिका। गृहयुद्ध समाप्त

समस्या

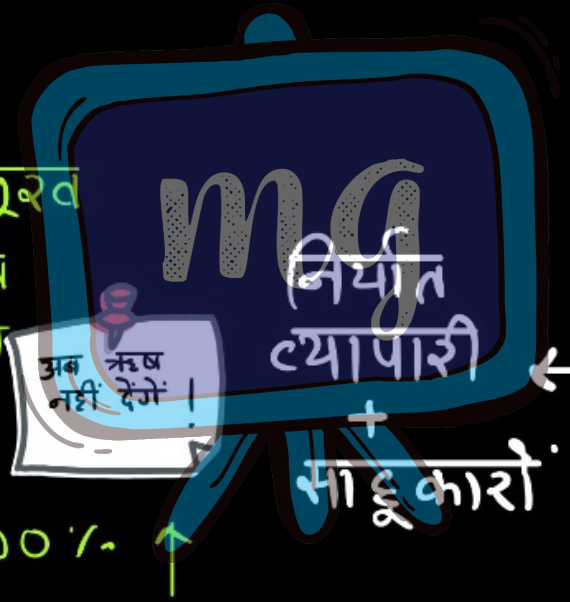
1. ऋण स्त्रोत सूख

2. 1820 - बंदोबस्त

↓ +30 साल

नया बंदोबस्त

↳ 50-100 %



ब्रिटेन ने वहां से ले लिया।

अन्याय का अनुभव

रैयत समुदाय गुस्सा ? ⟶ ऋणदाता वर्ग इतना संवेदनशील क्यों हो गया।



मूल - 100 ₹
ब्याज़ - 2000 ₹

↓

यह वर्ग परंपरागत नियमों का भी उल्लंघन कर रहा है।

ऋणदाताओं ने शिकायत की अंग्रेजों

↓

1859 - अंग्रेज़ = पारिसीमन कानून

↓

ऐक्ट → ऋणपत्र हस्ताक्षर → ऋणदाताओं

↓

तीन वर्ष

ब्याज़ संचय रोका जाए।

साहूकार की चालाकी

- नया बंध पत्र बनता
  ↳ (बकाया राशि + ब्याज़) = नया मूल
- जमा की रसीद नहीं देते।
- जाली आंकड़े भरते।
- किसान की फसलें कम कीमत पर खरीदी गईं।